

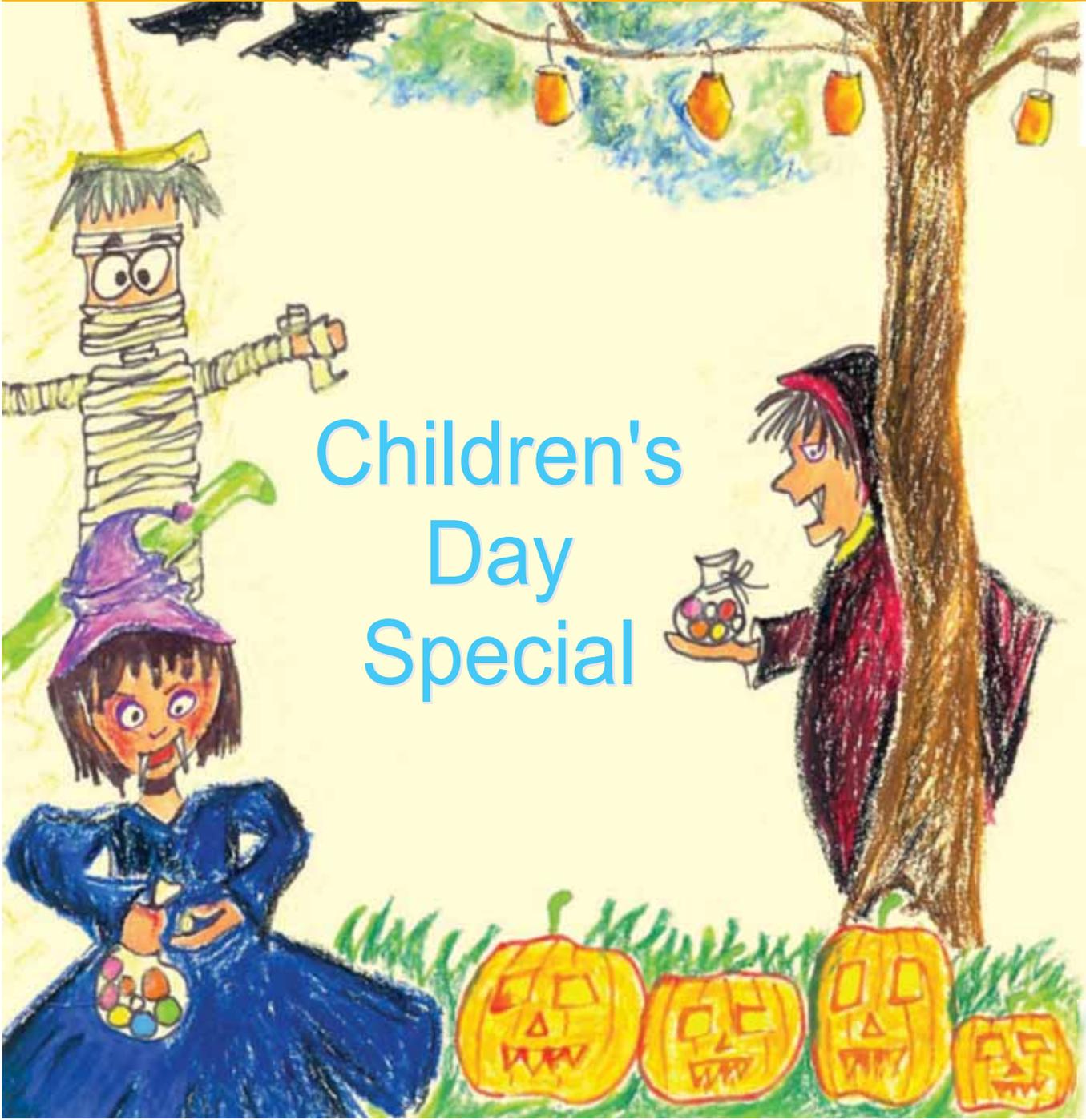
Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 11, November 2013

Children's Day Special





Readers' Club Bulletin पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 11, November 2013

वर्ष 18, अंक 11, नवम्बर 2013

Editor / संपादक

Manas Ranjan Mahapatra

मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण

Deepak Kumar Gupta

दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva

सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी

Narender Kumar

नरेन्द्र कुमार

Illustrators / चित्रकार

Children from Dehradun & Mussorie

देहरादून और मसूरी के बच्चे

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

Contents/सूची

Life	Vani Prasad	2
खरगोश का रहस्य	संदीप कुमार	4
दो रोटी का कर्ज	अंकित कुमार तिवारी	6
God's Own Child	Debadrita	8
Musings in the Dark	Jasmine Kaur	9
बैट की यात्रा	यश भाटिया	11
Umbrella Brings Hope	Sejal Agrawal	14
सूर्यास्त	सिद्धार्थ पाण्डेय	15
NBT Hosts the 2nd Kolkata Festival...		16
काला कौआ	निशिता	18
The Music of Sorrow	Ankriti Pandey	19
Not Enough Sugar...	Aarya Sarawgi	20
चूड़ियाँ	आर्तिका	22
गंदों की पंचायत	साकेत रतूड़ी	24
The Cliff	Shivang Gunjyal	26
कैसे करते हैं ये कलाकार...	तारा कात्यायिनी सिंह	28
घड़ी और चश्मा	अभिषेक राज	30
Follow Your Dream!	Alisha Lakra	32

Cover Art : Susmita Banerjee & Tathagat Pal

Editorial Address/संपादकीय पता

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

A Morning with an Illustrator



In its relentless efforts to promote reading habit in the country especially among the children, National Centre for Children's Literature (NCCL), organised an interactive storytelling session at Nehru Bhawan, Vasant Kunj, New Delhi on 21 October 2013 for school children with well-known illustrator **Shri Jagdish Joshi**, who has also authored over two dozen picture books for children.

The session, divided into two parts, was held in NBT's book shop and NCCL Library.

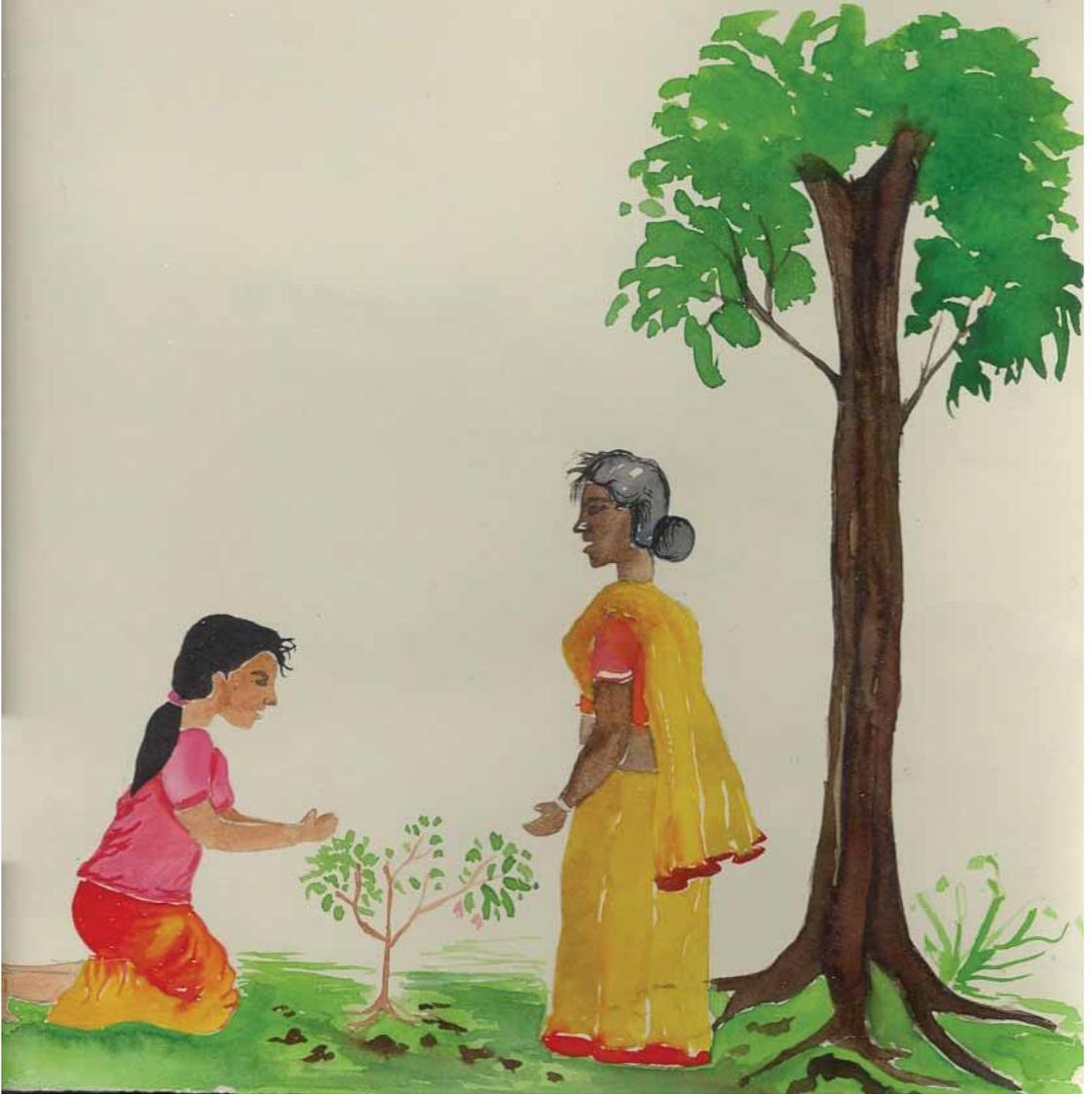
Shri Jagdish Joshi talked about the skills of illustration and making of picture books, and especially deliberated on his title in Hindi *Ek Yatra*, recently published by NBT. He confessed that most of his books are based on the real-life facts and not imagination. He said that he began his career as an illustrator when he was studying Fine Arts at the Indian College of Arts and Draftsmanship in Kolkata and later on worked for organisations like *Hindustan Times* and *Children's Book Trust*. "My books brought out by NBT have not only flourished my professional career, but also given me a distinct identity," he added.

The children also asked several questions to Shri Joshi regarding illustrations used in his books and his hobbies. Later, they glanced through the books available in the NCCL Library on various subjects related to children's literature in different Indian and foreign languages.

This special issue carries writings and illustrations by the children from Dehradun and Mussorie (Uttarakhand). The works were developed at a Creative Writing and Illustration Workshop held at Oak Grove School, Mussorie of the Ministry of Railways from 7 to 8 November, 2013 in which prominent authors Shri Ganesh Shaili, Shri Prempal Sharma, Ms Ratna Manucha and illustrator Ms Suvidha Mistry were the resource persons.

Life

Vani Prasad



TATHAGATPAL

LIFE – these are just four alphabets which encapsulate years between the

first breath inhaled to the last breath exhaled. You experience failures, you

experience the joy of attaining your goals, but behind these experiences, more importantly you learn through fun and adventure, the lessons from which you can imbibe values, and shape your character.

Every vacation, I would escape from the hustle-bustle of the metropolitan life and would run off to my grandmother's house. Being a keen naturalist, she kept a well-maintained lush green garden. As a part of our daily routine we would take a round of the garden observing all the plants which needed regular monitoring or extra care.

One morning while taking our ritual round, I came across an empty patch and it suddenly struck me that I could plant one of my favourite trees there – the *Guava Tree*.

The very same day my grandmother and I went to the nursery and picked up the seed and other requirements. With great care, I planted the seed and from then on, made several visits to the sapling making sure that it was supplied with a sufficient amount of water and manure.

Days flew by and before I knew, I was back to my grandmother's house the very next vacations. I was hopeful that the sapling would have grown to a considerable height but was in great dismay seeing no change in the sapling.

I was infuriated and called my grandmother there at once. I felt like uprooting the sapling.

My grandmother looked at me calmly and told me that I would have to wait for the next set of holidays. I was apprehensive whether the tree would grow and somewhere I feared that my grandmother was giving me false hope. Putting all the feelings aside, I prepared myself for the next holidays.

It was just another term which went by and I came back all excited for the holidays. Before I could meet anyone, I ran towards the *Guava Tree*. I was ecstatic as my eyes set themselves on a full-grown tree, which bore fruits.

On seeing the full-grown tree, I understood what my grandmother was trying to convey me. She had taught me patience and perseverance. I had an impatient approach towards the situation and wished to uproot the plant at the initial stage itself.

In a subtle manner, she had enabled me to feel that by nurturing the plant with patience and affection, it would grow beautifully. By a mere incident such as this; my grandmother had been successful in teaching me to 'Dream', 'Believe', 'Achieve' and more importantly to have 'Patience'.

खरगोश का रहस्य

संदीप कुमार

एक प्यारी-सी लड़की थी, सोनाली। बिलकुल मासूम, छोटी-सी, कोमल-सी। देखने में ऐसी लगती, मानो छूने से दाग लग जाए! उसके मम्मी-पापा नहीं थे। इस कारण वह उदास रहती थी।

सोनाली स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन जब वह झूले में झूल रही थी तो उसे एक खरगोश दिखाई दिया। उसे वह खरगोश बहुत अच्छा लगा। वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ी। उसका पीछा किया, पर खरगोश को पकड़ नहीं पाई।

अब वह खरगोश उसे रोज दिखाई देने लगा। जब भी वह झूला झूलती तो उसे खरगोश दिखाई देता। अब यह हर रोज का काम हो गया।

एक सुबह वह झूला झूल रही थी। उसे वही खरगोश दिखाई दिया। आज उसने ठान लिया कि वह उसे पकड़कर ही रहेगी। वह खरगोश के पीछे दौड़ पड़ी। खरगोश भी उछलता-कूदता वहाँ से भागने लगा। अब वह झाड़ियों के बीच से निकलकर भाग रहा था और सोनाली उसके पीछे-पीछे दौड़ रही थी।



अनमोल कुमारी

खरगोश का पीछा करते-करते वह एकाएक रुक गई, क्योंकि खरगोश एक बड़े-से बिल में घुस गया था। उसने सोचा, 'अब मैं क्या करूँ? आज तो मैं इसे पकड़कर ही रहूँगी।' आखिरकार, वह भी खरगोश के पीछे-पीछे बिल में घुस गई। जब सोनाली बिल में घुसी तो उसे लगा, जैसे वह बिल नहीं बल्कि एक छोटी-सी सुरंग है। खरगोश उससे थोड़ी दूर आगे खड़ा

था, मानो कह रहा हो, 'मुझे पकड़कर दिखाओ तो मानूँ!'

जब वह सुरंग से बाहर निकली तो उसे ऐसा लगा, मानो वह किसी और दुनिया में आ गई हो। चारों तरफ फल से लदे पेड़, फूल, रंग-बिरंगी तितलियाँ और हरे-हरे घास से भरे मैदान थे। उसे भूख लग रही थी। इसलिए वह वहाँ पेड़ पर लगे फलों को तोड़कर खाने लगी। उसने पेट भरकर फल खाया और सो गई।

जब वह उठी तो देखती है कि उसके सामने एक परी थी, जो बहुत खूबसूरत थी। सोनाली को अपनी माँ की याद आने लगी और वह रो पड़ी। बोली, "माँ, तुम कहाँ हो? मुझे तुम्हारी याद आती है। माँ, तुम वापस आ जाओ!"

परी ने सोनाली को चुप कराया। बोली, "तुम क्यों रो रही हो? चुप हो जाओ। देखो, कितनी अच्छी जगह है!"

सोनाली बोली, "मुझे मम्मी की याद आ रही है!"

परी बोली, "मैं भी तो तुम्हारी माँ जैसी हूँ। तुम्हारी मम्मी ने मुझे भेजा है। अब चुप हो जाओ। वो तुमसे बाद में मिलने आ जाएगी।"

सोनाली अब चुप हो गई थी। वह परी को देखकर मुस्करा रही थी। परी ने उसे हवा में उड़ाया और बहुत-सारे जादू दिखाए।

सोनाली को लगा कि उसे उसकी दादी अब ढूँढ़ रही होगी। वह बोली, "मुझे अब घर पहुँचा दो।"

परी बोली, "ठीक है, चलो।"

जब सोनाली घर जा रही थी तो उसने परी को बताया, "मुझे रोज एक खरगोश दिखाई देता है। बहुत ही प्यारा। मैं जब भी उसे पकड़ने जाती हूँ तो वो भाग जाता है। मैं क्या करूँ?"

परी मुस्कराते हुए बोली, "जब तुम उसे पकड़ लोगी तो तुम्हें अपने आप पता चल जाएगा कि इसके पीछे क्या रहस्य है।"

जब सोनाली बड़ी हो गई तो उसे बगीचे में वही खरगोश दिखाई दिया। वह उसे पकड़ने गई। बहुत मेहनत के बाद सोनाली ने खरगोश को पकड़ लिया और उसके सिर को चूम लिया।

तभी वहाँ एक तेज रोशनी हुई। खरगोश एक सुंदर-सा राजकुमार बनकर उसके सामने खड़ा हो गया। बोला, "मैं राजकुमार हूँ। तुमने मुझे मेरे शाप से मुक्ति दिलाई है इसलिए धन्यवाद। मैंने तुम्हारी जैसी सुंदर लड़की आज तक नहीं देखी। क्या तुम मेरे साथ मेरे महल में रहोगी?"

सोनाली खुशी से उछलकर बोली, "हाँ राजकुमार! मैं तुम्हारे साथ जाना चाहती हूँ!"

दो रोटी का कर्ज

अंकित कुमार तिवारी



लगाई। भूख से वह अधमरा—सा हो गया था।

“क्या हुआ?” अंदर से क्रोध भरे स्वर में एक आवाज आई।

आवाज सुनकर अब्दुल को लगा कि इस घर से भी उसे खाली हाथ ही जाना होगा। उसने हिम्मत करके भरे स्वर में कहा, “माई, क्या दो रोटी मिल जाएगी? पाँच दिन से कुछ खाया नहीं हूँ, बहुत भूख लगी है!”

मालकिन ने जब दरवाजा खोला तो अब्दुल की हालत देखकर उसका हृदय पिघल गया।

निखिल

“अच्छा, देखती

“माई... ओ माई, कुछ खाने को दे दो!” चौदह साल के एक दुबले—पतले अब्दुल नामक बालक ने निराशा के स्वर में गुहार

हूँ।” यह कहकर मालकिन घर के अंदर चली गई और अपने बेटे सोनू से बोली, “सुन सोनू, उस टेबल पर रोटी रखी है।

बाहर खड़े लड़के को ये रोटियाँ दे दो।
भूखा है बेचारा!”

मालकिन को धन्यवाद देते हुए वह रोटियों को हाथ में दबाकर रेल ब्रिज की ओर दौड़ गया। ब्रिज के नीचे उसकी बहन रज्जो उसका इंतजार कर रही थी। रज्जो की उम्र यही कोई तीन-चार साल रही होगी।

रज्जो का चेहरा खिला हुआ था। आज उसे दो रोटियाँ खाने को मिलीं। वह अपने भाई से कहती है, “भाइया, तू नहीं खाएगा?”

“मैं खा चुका हूँ। मेरा पेट भरा हुआ है।” उसने अपनी बहन से कहा। वह अपने पेट को दबाकर रात को सो गया।

चार दिन बीत गए।

आज की सुबह वह माल रोड की ओर निकला था। सुबह उसे एक घर से एक रोटी मिली थी। उसने उसे बचाकर रखा था।

कुछ दूर के बाद उसने एक युवक को चाय पीते देखा। उसका भी मन चाय पीने को किया।

लेकिन जेब में तो एक फूटी कौड़ी न थी! वह पानी पीकर एक बरगद के पेड़ के नीचे सो गया।

दोपहर की कड़ी तिलमिलाती धूप ने उसे उठा दिया। अब सड़क बस और

गाड़ियों से भरी थी। धूल इतनी उड़ रही थी कि सड़क के उस पार देखना मुश्किल था।

भागता हुआ सड़क पर गाड़ियों को चीरता हुआ एक बार तो उसने एक बच्चे को धक्का तक दे दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह स्वयं एक ट्रक के नीचे आ गया।

धक्का खाए उस बारह साल के बच्चे को कुछ समझ नहीं आया कि वहाँ क्या हुआ। धक्के से लगी अपनी चोट भूलकर वह उस लड़के को बड़ी देर तक देखता रहा।

तब उसे याद आया—वह जो लड़का अपनी आखिरी साँसें ले रहा था वह और कोई नहीं वही भिखारी था, जो चार दिन पहले उसके घर से दो रोटी माँगकर ले गया था।

सोनू की माँ भी भागती-भागती उस जगह पहुँच गई। अब्दुल ने अपने हाथ में जोर से पकड़कर रखी रोटियाँ सोनू को यह कहते हुए दे दी।

“यह मेरी बहन रज्जो को दे देना। वह बड़े रेल ब्रिज के नीचे रहती है!”

सोनू और उसकी माँ अवाक् थी।



God's Own Child

Debadrita

Her existence is not welcome
But she isn't a lie
Don't just stand there
And watch her die

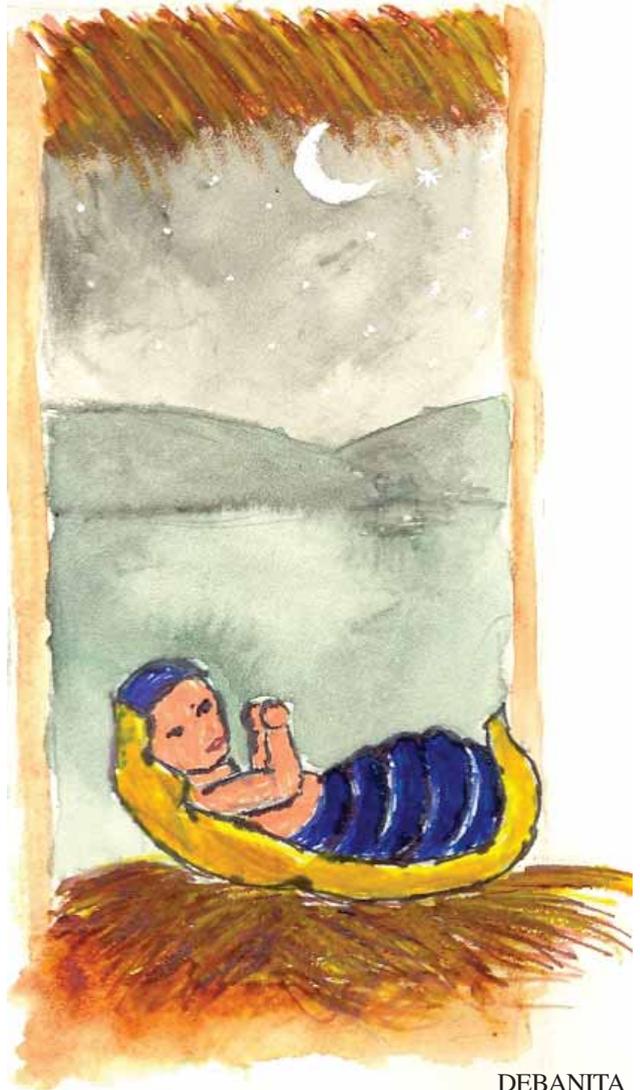
Don't treat her like scum
It isn't fair
She asks for nothing
Just a little more care

The Earth sees another morning
But some stand stunned
When the first ray of light
Finds her abandoned

She is so talented
Never underestimate her
Behind the boy child
She is never far

The girl child
She's still anonymous
She's the creator of new beginnings
Altering a new dawn after the dusk

Do help her survive.
Because she's gentle, kind and mild
As true it is
She is God's Own Child...



DEBANITA

Musings in the Dark

Jasmine Kaur

I was sitting on a bench at the graveyard. It was almost midnight. The fog seemed to surround me. The moon was not visible. I mused to myself, "It's a new moon. Perfect for starting a new life."

"Really, why? You seem rather young to start a new life," said someone. I was terrified on hearing an unknown scary voice and I screamed out of fear.

"Oh calm down, I am not going to eat you." He was standing right in front of me and I stared at him in shock. "Not that you're ugly, I am sure you'll be delicious to eat," he continued.

He was only two to three years older to me and very handsome. But the only thing that made him scary was that he was white and translucent like a ghost.

"You're the ghost who haunts this place, aren't you?" I asked.

"Right, on the mark!" he said cheerfully. "But do explain what you said earlier, it sounds rather interesting."

I opened my mouth to speak but he interrupted me and said, "Oh, wait! I know, you're running away!"

"Actually I am going to kill myself," I replied.

"Oh...seems like a waste, isn't it?" he said.

"I have failed twice in a row. Believe me, I deserve it," I cried.

"That must have made you feel useless," he remarked.

"Exactly," I said.

"Bring your books here tomorrow at midnight," he commanded.

"What? Why?" I asked.

"To help you in your studies," he said affectionately.

"And why do you want to do that?" I asked him suspiciously. He winked at me and said, "I have my own evil plans," and disappeared.

The other night I went to the graveyard. He was leaning against a tomb. He smiled at me and then we started studying.

"No it's not *a*, it's *an*!"

"It's translucent, not transparent!"

"No, no eighteen divided by two is nine not six!"

This went on for almost a year.

When the results were about to come, I was praying and hoped that



DEBAYANICHAKRABORTY

I can finally begin a new life.” I was confused and asked, “What do you mean?”

“You see after I died...” He spoke gently, “I could not go to heaven as I was greedy about my knowledge and I never shared it with people.

I was told that unless I shared my knowledge with someone, I would not be able to start a new life. Now, thanks to you, I can.”

“But, but what about me? You just can’t leave me!” I said almost in tears. He gave me a sad smile.

He suddenly brightened up and said, “It’s a new moon. Perfect for starting a new life.”

atleast this time I will be able to clear the exam. I could’nt believe my eyes when I saw the result. I got 95 per cent!

Screaming with joy, I rushed to the graveyard, yelling, “I got 95 per cent! I got 95 per cent!”

He beamed at me, “Excellent! Now

Looking up at the sky, I thought, “he is right, it is a new moon.”

I turned back to see him. No one was there but only an envelope was lying on the floor. Fighting back tears, I picked it up.

“The best is yet to come!” it said.

बैट की यात्रा

यश भाटिया

रात के डेढ़ बज रहे थे। चारों तरफ सन्नाटा था। विराट कोहली के बक्से में सब सो रहे थे—पैड, हेलमेट, थार्ड—गार्ड, एल्बो—गार्ड—सभी। तभी एक कोने से किसी के सिसकने की आवाज आती है—

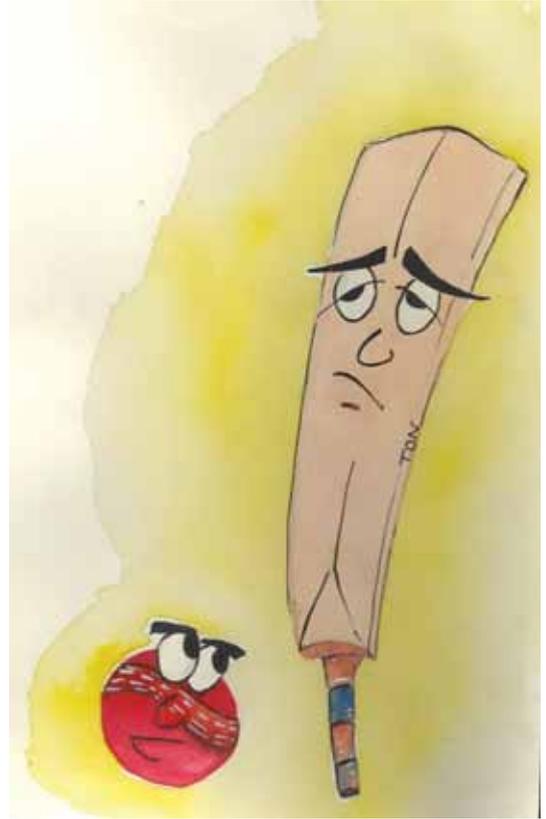
“हूँ... हूँ... (सुबक, सुबक)!” बैट रो रहा था। गेंद बैट की सिसकियाँ सुनकर लुढ़कती हुई उसके पास आई और बोली, “क्या बल्ले भाई, आज तुमने मेरी पिटाई की, मेरा सारा बदन दर्द कर रहा है और रो तुम रहे हो!”

बैट आँखों से आँसू पोंछता हुआ बोला, “ऐसा नहीं है छोटी बहन, आज मुझे घर की याद आ रही है।” गेंद अपने सीवन के धागे को खुजलाती हुई बोली, “कौन—सा घर भाई? अच्छा, वो फैक्टरी, जिसमें लकड़ियों को बेरहमी से काटकर और न जाने कितने जुल्म ढाकर उन्हें तुम्हारा जैसा बनाते हैं!”

बल्ला बोला, “न बाबा न! उस जगह की याद तो किसी को सपने में भी न आए। मैं तो उस घर की बात कर रहा हूँ जहाँ मैं पला, बढ़ा।” ऐसा कहते हुए बल्ले ने पहले गहरी साँस ली, फिर अपनी निगाहें ऊपर करके बोला, “वो सुंदर पहाड़ी, वो रूई जैसे बादल, वो खुला आसमान, वो

ठंडी हवा... आह! बड़े मजे के दिन थे वो!

लेकिन एक दिन कुछ लोग वहाँ आए और हमारे भाई—बंधु को काटने लगे। सब रहम की भीख माँगने लगे, पर मैं खुद टूटकर कटे लकड़ियों में शामिल हो गया। मुझे बचपन से ही घूमने का शौक था। मेरे बुजुर्ग मुझे रोकने लगे, पर मैंने उनकी एक भी न सुनी। मैं दूसरी लकड़ियों में शामिल



तथागत पाल



हो गया। उन लोगों ने हमें उठाया और ट्रक में रख दिया, कुछ दूर ले जाकर उन्होंने हमें नदियों में फेंक दिया।

“हम ‘छपाक’ से जाकर नदी में गिर पड़े। पहले तो मुझे डर लगा कि कहीं मैं डूब न जाऊँ। मैं बौखला-सा गया था और मदद के लिए चिल्लाने लगा। लेकिन धीरे-धीरे मैं पानी की सतह पर आ गया। मुझे तब जाकर पता चला कि मैं एक अच्छा तैराक भी हूँ। मैं दूसरी लकड़ियों के साथ दौड़ लगाने लगा। कभी किसी पत्थर से टकराया, कभी रुककर आराम कर लिया। मैं फिर से अपने पहाड़ की दुनिया को भूलकर इस नई दुनिया का लुप्त उठाने लगा था।

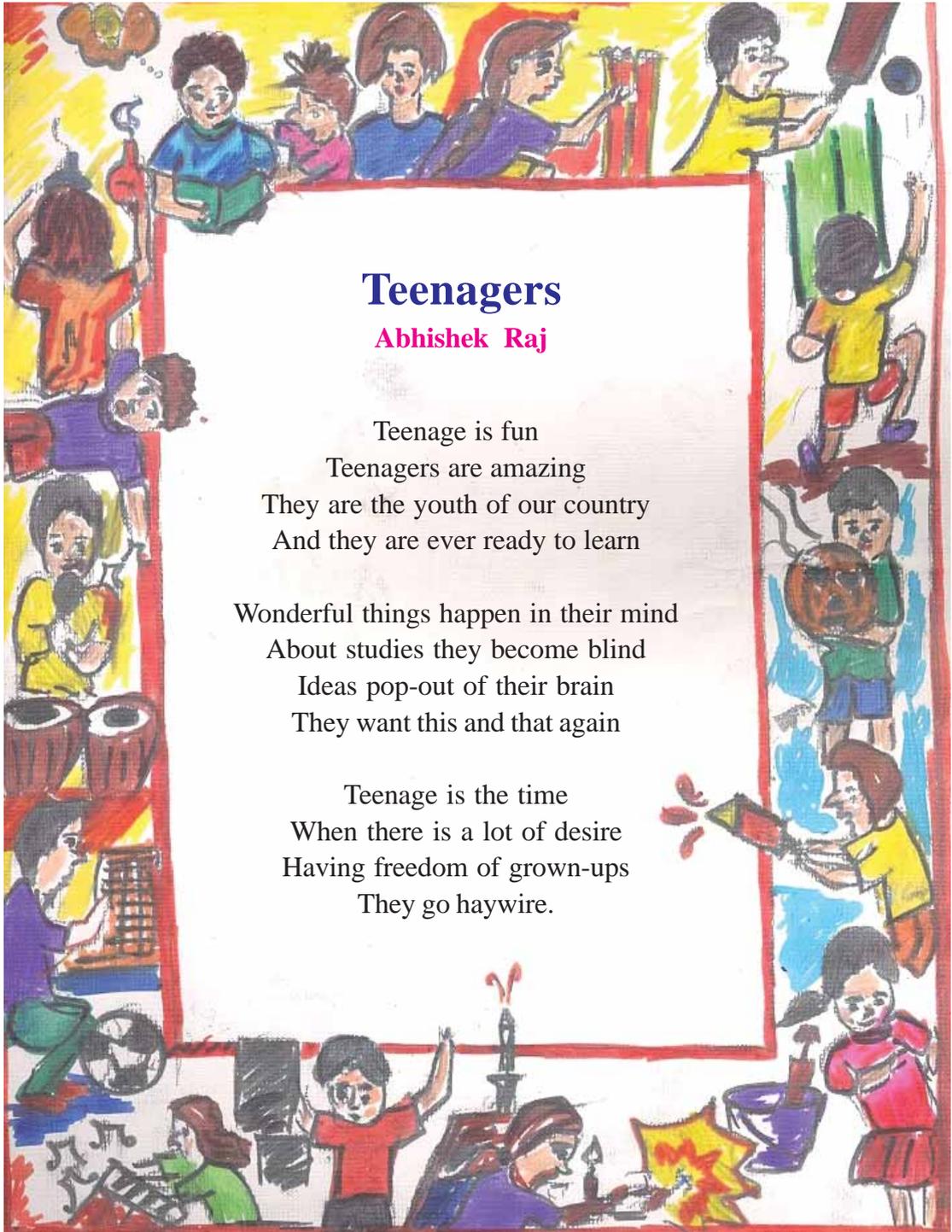
“फिर जैसे-जैसे पहाड़ों से नीचे आने लगे, हमारी वेग भी कम होने लगी।

“मैं अपने दोस्तों के साथ इस रोमांच भरी यात्रा के बारे में बात कर ही रहा था तभी मैंने देखा कि नदी के अगले भाग में काफी लकड़ियाँ इकट्ठा हो रखी थीं और उन्हें पानी से निकाला जा रहा था।

“मुझे फिर थोड़ा डर लगा। मैं सोचने लगा कि मेरे साथ क्या होगा। पता चला कि ये लोग हमें ‘फैक्टरी’ नाम के स्थान पर ले जा रहे हैं। मेरे मन में एक नई उमंग भर आई। मुझे लगा कि यह भी कोई ‘मनोरंजन पार्क’ होगा। लेकिन जब अंदर गया तो वहाँ का दृश्य देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। वहाँ लकड़ियों को छीला जा रहा था, काटा जा रहा था, ठोका जा रहा था, पीटा जा रहा था।

“मुझे डर लगने लगा। मुझे अपने घर की याद आने लगी। मेरे साथ भी वही हुआ जो दूसरी लकड़ियों के साथ हुआ। और आज, मैं यहाँ तुम्हारे सामने एक बल्ला बनकर खड़ा हूँ। मुझे अपने घर की बहुत याद आती है!”

कहानी सुनकर जब बल्ले ने गेंद की तरफ देखा तो गेंद भी रो चुकी थी। बल्ला फिर अपने पुराने दिनों की याद करने लगा।



Teenagers

Abhishek Raj

Teenage is fun
Teenagers are amazing
They are the youth of our country
And they are ever ready to learn

Wonderful things happen in their mind
About studies they become blind
Ideas pop-out of their brain
They want this and that again

Teenage is the time
When there is a lot of desire
Having freedom of grown-ups
They go haywire.

SHUBHA KUMARI

Umbrella Brings Hope

Sejal Agrawal



DEBADRITA & ALISHA

A village near Rajasthan was facing the problem of famine. The farmers could not cultivate their land due to scarcity of water. Not only human beings, birds and animals were also starving.

Days passed, weeks passed and the months passed. The condition of famine worsened so much so, that it could no longer be ignored. The headman of the village held a meeting. The headman and villagers concluded that the reason for

no rainfall was the anger of God. The solution for the crisis thought upon was to pray to God and please Him to make the situation better. Finally, the villagers decide to gather in the field in the evening.

At 6 pm, the villagers assemble. The prayer started. A person came running and joined the prayer after 10 minutes and opened his umbrella. The headman asked him the reason for his late coming. He said that he thought that the rain will arrive during the prayer. Therefore, he was searching for his umbrella at home and got late. Everyone laughed at his reply.

Soon the sound of thunder is heard, followed by a voice — the voice of God. He said, “Your prayers have been accepted and you will soon receive the rain. But this has only been possible because of the act of one person who came with an umbrella. Through his act, he has displayed hope, faith and trust that his prayers will be granted. It showed the positive outlook which he has towards life.”

Silence pervades and suddenly, a flash of lightning followed by rain arrives.

सूर्यास्त

सिद्धार्थ पाण्डेय

शाम छह बजे का समय था
सूरज हो रहा था अस्त
घर में लौट रहे थे पापा
काम से होकर पस्त

चीं-चीं की आवाज से
गूँज गया सारा आसमान
चिड़ियों के चोंच में था
खाने का सामान

बच्चे पी रहे थे दूध घरों में
और कर रहे थे शाम का नाश्ता
घर में मम्मी बना रही थी
बड़ा लजीज-सा पास्ता

बत्तियाँ जल उठीं बाजारों में
चमचमा रही थीं दुकानें
सब व्यस्त थे करने में
अपना कोई-न-कोई काम

नीला था आसमान
मगर अब हो रहा था काला
सोने जा रहे थे सब
लगा रहे थे अंदर से ताला

सूरज हो रहा था अस्त
और अंधेरा घना हो गया
देखते-ही-देखते सूरज
अपनी दुनिया में खो गया।



सुकन्या भारती

Kolkata Festival of Children's Content

An Overview



National Book Trust, India organised the 2nd edition of the Kolkata Festival of Children's Content at the Future Foundation School, Regent Park, Kolkata from 23 to 26 September 2013. The Festival was organised in association with the Publishers' and Booksellers' Guild, West Bengal and Sri Aurobindo Institute of Culture, Kolkata. Renowned singer, composer and actor, Shri Anindya Chattopadhyay inaugurated the Festival with the signature *Boimelar Gaan* at the school premises on 23 September 2013. He felt that in this age of Internet and Smartphones, the written world will never die out. He added, "Books are like music. Many singers rue that the CD sales are down because of piracy but the fact is that people are listening to the music. And people do

read. Tell children that reading is as important as career counselling. May be he/she will pick up a pen."

Shri Debajyoti Dutta, eminent publisher and former President, Federation of Indian Publishers, Shri Sourin Bhattacharya, noted academician, Shri Tridib Chatterjee, General Secretary, Publishers' and Booksellers' Guild, West Bengal, Shri Manas Mahapatra, Editor (NCCL) and Shri Ranjan Mitter, Principal, The Future Foundation School spoke on the occasion.

The speakers hailed the NBT's pioneering effort for celebrating Indian children's literature in the city with school children and help them discover their creative skills through workshops on illustration, publishing and

interactive sessions with authors. They were of the view that this ‘unique concept’ will empower children to make their own path.

The Children’s Book Fair organised on the occasion was open from 11.00 am to 7.00 pm everyday for general readers. Thousands of children’s books were put up on display-cum-sale in this Fair by the National Book Trust, India and the Publishers’ and Booksellers’ Guild, West Bengal. A large number of book lovers showed keen interest in the exhibition.

The Festival was a treat for booklovers as well as the professionals in the field of children’s literature as a host of activities related to children’s literature were organised during the Festival. On 24 September, a thematic session on the topic *How to Illustrate a Book for Today’s Children: New Challenges* was held. The discussion was chaired by Prof. Jayanta Choudhury. Shri Debasis Deb from Kolkata, Shri Durlabh Bhattacharjee from Assam



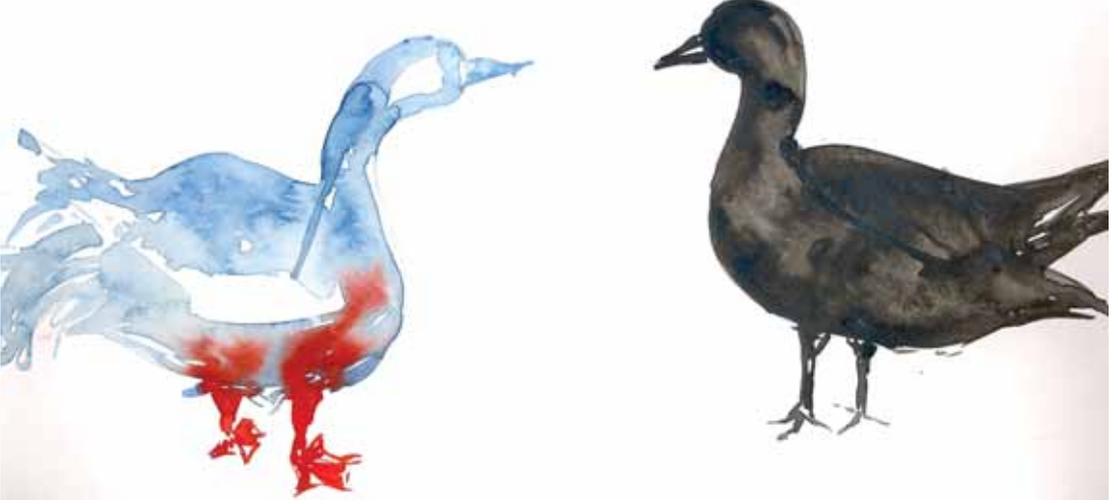
and Shri Debu Sarkar, Deputy Director (Art), NBT were the speakers on the occasion.

On 25 September, Authors’ Readings took place in which Shri Amar Mitra, renowned Bangla author and Ms Jash Sen, noted author in English interacted with the children and read from their books. Shri Bratin Dey, Bangla Editor, NBT and Ms Virginia Redden from The Future Foundation School were the facilitators for the programme.

The most significant session of the Festival, KFCC Annual Lecture on *Indian Children’s Literature Today: Need, Availability and Accessibility* was delivered by Shri Arvind Kumar, former Director, NBT and now Convener of the Publishers’ Action Group (Pag-e) on 26 September 2013. The session was chaired by Shri Abhijit Bhowmik, Chief Librarian, State Central Library, Kolkata and facilitated by Ms Dipanwita Roy, famous author and TV producer.

काला कौआ

निशिता



उजला-उजला हंस एक दिन
उड़ते-उड़ते आया

हंस देखकर काला कौआ
मन-ही-मन शरमाया

लगा सोचने, उजला-उजला
मैं कैसे हो पाऊँ
उजला हो सकता हूँ साबुन से मैं
अगर नहाऊँ

यही सोचकर काला कौआ
मेरे घर पर आया

और आँगन से मेरे साबुन लेकर भागा
फिर जाकर पेड़ पर उसने
साबुन खूब लगाया

खूब नहाया फिर भी
अपना कालापन न धो पाया

मिटा न उसका कालापन तो
मन-ही-मन पछताया

पास हंस के कभी न फिर वो
काला कौआ आया।

The Music of Sorrow

Ankriti Pandey

A note of salt
seeping down the desert of sorrows
to the sentiments of people
of yesterdays and tomorrows

People who are mercilessly killed
whether in body or in soul
even if the time has long gone
the pain is still within

And the chords make harmony
in one's life or death
and the music reaches out for agony
to carry hope's rays

But the song continues
its notes growing sour
until the whole song is
diminished to ruins

Now as the leaves rustle nearby
a storm's coming on
the gentle drops of water
are almost nearly gone

And when these indicate
the storm's coming in
all the music is liberated
of the pain that was once within...



DEVENDRA SINGH

Not Enough Sugar for My Tea

Aarya Sarawgi

I woke up and rubbed my eyes. Today was one of the best days of my life. It was the day of my college graduation. Now I can finally forget about studying and step into the real world, earn money and do all the things in my office that all the grown-ups do. I will be writing articles for *The Times of India* for the next two years.

I went to the washroom to bathe and dress-up. I was horrified when I looked at myself in the mirror. I stared back and was shocked to see my face as it looked like a face of an old hag!

I shouted with all my might. I ran towards my car. I wished to get out of the place. I was going mad. I rushed to my best friend Lily's house.

As the bell rang, Lily came out to greet her early morning visitor.

"Hey, How come...? What happened?" asked Lily.

She was upset to see the scared and crying Aarya in front of her.

I was shocked and angry. Couldn't she realize that my face was looking like a face of an old woman? I was convinced that I had gone mad. I ran to her room and looked at myself in the mirror again.

"Oh, God!" I muttered to myself.

"What happened? Is everything alright?" Lily was out of breath as she ran after me.

I explained everything to her and after that, the last thing I remembered was seeing a grim expression on her face.

When I woke up, I found myself lying on Lily's bed. She was talking to someone who sounded like a doctor. She must have called him right after I lost consciousness.

"Are you alright? How are you feeling?" asked Lily.

With a longing to see mirror again, I replied, "I am fine and feeling better."

"Oh! Great! Um... the doctor says that ..." She spoke hesitantly, "the doctor says that you need to take rest."

"But I need to go for my graduation ceremony."

"Aarya! Okay, I'll ask the doctor," she turned around to call the doctor.

"Of course you can go to your college but on your way back, you need to visit my clinic," said the doctor while entering the room.

“Thank you so much doctor,” said I with a tinge of genuine gladness in my voice.

“Can I see the mirror?” I asked Lily when the doctor left.

“Sure,” replied Lily as she helped me stand up and walk to the washroom.

Seeing that same old woman in the mirror again, I fainted within a short span.

“Aarya! Aarya! Get up! Open your eyes! Please!” I could hear the anxious voice of Lily.

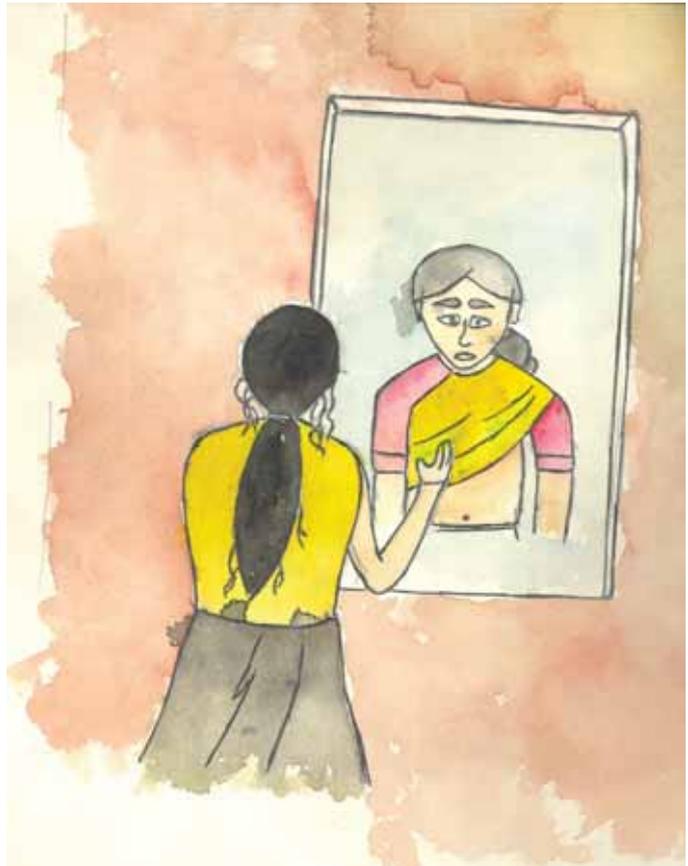
“What has happened to me? Why am I seeing the old lady over and over again?” I stammered as I tried to put the thousand swirling questions in my head into two lines.

“Aarya, listen to me. We need to go to a hospital. What the other doctor said was just an assumption!” said Lily.

“No, damn it! I want to know!” I was fully awake at that very moment.

“Listen to me Aarya,” she tried to sober up. “You may...you may be having symptoms of spectrophobia.”

She started crying louder as the words leave her mouth.



DEVENDRASINGH

Akanksha too was in tears as she finished reading the story of Aarya and went to her mother.

“I’m sorry for arguing with you last night mom. I have realized that life can do anything with us anytime so we should enjoy each day as if it is our last day to live — even if I don’t get my iPhone,” said Akanksha to her mother.

All that her mother did was she gave her a very tight hug.

चूड़ियाँ

आर्तिका

खेल खत्म होते ही तारा बिना पैर धोए, दौड़ती हुई रसोईघर में जाकर अपनी माँ के पल्लू से लिपट गई। “माँ, क्या आप मुझे नई गुड़िया दिलवा दोगी?”

“क्यों? पुरानी वाली कहाँ गई?” माँ ने पूछा।

“वो भी है, पर मुझे एक और चाहिए!”

लखनऊ के डालीगंज इलाके में रहने वाली एक निम्न-मध्यवर्गीय दंपती की तारा इकलौती बेटा थी। वह थी तो केवल चार वर्ष की, परंतु नटखट इतनी कि स्वयं बाल गोपाल का रूप हो।

तारा स्वभाव से जिद्दी भी थी। बालिका का चंचल मन कभी रंगों का नया डब्बा माँगता था तो कभी चप्पल का नया जोड़ा।

अधिक आमदनी न होने के बावजूद माता-पिता तारा की माँगें पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

“बोलो न, दिलाओगी क्या?” तारा ने अपनी माँ का पल्लू खींचते हुए एक बार फिर पूछा।

रसोईघर में खड़ी माँ के विचार ठीक उसी प्रकार उथल-पुथल कर रहे थे जैसे चूल्हे पर उबलता हुआ दूध। पति की बिगड़ती सेहत और डूबते हुए कारोबार

को लेकर वह काफी चिंतित थी। ऐसे में तारा की इस जिद ने उसे क्रोधित कर दिया। एक पल में ही उसने अपना पल्लू तारा के हाथों से छुड़ाया और उसे जिद करने के लिए डाँट दिया।

माँ की ऊँची आवाज सुनकर तारा का दिल दुख से भर गया और यही दुख आँसू के रूप में उसके नेत्रों से बहने लगा। वह चुपचाप रसोईघर से चली गई।

कपड़ों की अलमारी खुली हुई थी। कपड़े और खिलौने इधर-उधर पड़े हुए थे। जब रसोई का काम निपटाकर माँ तारा की खोज में अपने कमरे में पहुँची तो दृश्य कुछ ऐसा ही था।

फैले हुए सामान के बीच नन्ही-सी तारा अपने हाथों में कुछ दबोचे हुए बैठी थी। माँ को देखकर तारा ने अपने हाथ धिरे से आगे बढ़ाए और बोली, “क्या आज मुझे नई गुड़िया दिलवा दोगी?”

उसके हाथ में थी उसकी पुरानी गुड़िया, सिर अलग और शरीर अलग। यह देखते ही माँ अत्यंत क्रोधित हो उठी। गुस्से में बड़बड़ाते हुए उसने खींचकर तारा को खड़ा कर दिया और कमरे के एक कोने की ओर धकेल दिया।

मासूम बालिका माँ के इस कठोर व्यवहार से काफी अचभे में थी। वह सिसकियाँ भर-भरके रोने लगी और मन-ही-मन सोचने लगी, 'माँ कितनी बुरी है! मैं माँ से कभी बात नहीं करूँगी।'

इन्हीं विचारों के बीच तारा को माँ की रूआँसी-सी आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो मालूम हुआ कि तारा को खींचते समय माँ ने हाथ इतने जोर से झटका था कि उसके हाथ की चूड़ियाँ ही टूट गई थीं। उन्हीं में से एक टूटी चूड़ी ने माँ के हाथ पर एक घाव बना दिया था।

माँ का घाव देखते ही तारा का गुस्सा प्यार में बदल गया। वह दौड़कर अपनी माँ की गोद में जा बैठी। पहले उसने माँ की आँखों से आँसू पोंछे और फिर अपनी फ्रॉक के कोने से उनका घाव।

फिर अपनी मासूम आवाज में बोली, "माँ, मुझे, गुड़िया नहीं चाहिए। बस, आप ठीक हो जाओ!"



दिति मिस्त्री

गेंदों की पंचायत

साकेत रतूड़ी



देवेन्द्र सिंह

“शांत हो जाइए!” सरपंच क्रिकेट-गेंद ने गुहार लगाई। दिल्ली की लोकसभा में क्रिकेट की गेंदों की पंचायत लगी थी। सभी क्रिकेटप्रेमी देशों से विभिन्न प्रकार की गेंदें आई थीं।

सरपंच-गेंद बाकी पंचों के साथ बैठ गई और सभा प्रारंभ हुई। सभा के आयोजन का मुद्दा था-क्रिकेट-गेंदों के साथ होने

वाला बुरा व्यवहार।

सरपंच जी ने एक लंबी-चौड़ी कहानी भूमिका के रूप में कही, उसके बाद उन्होंने सभा में उपस्थित गेंदों से अपनी बात रखने को कहा। हर गेंद अपना-अपना दर्द सुनाने में जुट गई और एक शोर के रूप में सबकी आवाज सुनाई दी।

सरपंच जी ने सबको शांत कराते हुए एक-एक करके बोलने को कहा। एक गेंद बोली, “माई-बाप, मानती हूँ इनसान हमें कष्ट देते हैं मगर हमें बनाते भी तो वही हैं, और हमारी कीमत भी वही लगाते हैं। सचिन तेंदुलकर जिस गेंद को छू दें वह लाखों में बिकती है, लाखों में!”

तभी भीड़ में से एक छोटी कंचे जैसी चीज बाहर निकली और जोर से बोली, “एक बार हुआ तो ठीक है, मगर कोई सैकड़ों बार हुआ तो?”

सभा में उपस्थित सभी लोग उसे देखने लगे। सरपंच ने उस गेंद की तरफ देखा तो हँसते हुए बोली, “पहले ये बताओ, तुम कंचे होकर हम क्रिकेट-गेंदों के बीच क्या कर रहे हो?”

“मैं कंचा नहीं हूँ। मैं वो अभागी गेंद हूँ जिससे सचिन तेंदुलकर ने दो सौ रन मारे थे।”

पूरी सभा में हड़कंप मच गया। “मैं भी हूँ”, तभी एक गेंद चिल्लाई और सबकी निगाहें एक टूटी-फूटी गेंद की तरफ पड़ी। उसे देखकर सबका दिल भर आया।

सरपंच ने उससे पूछा, “तुम कौन हो?”

“मैं वह गेंद हूँ जिससे युवराज सिंह ने छह छक्के मारे थे।”

तभी एक विशाल फुटबॉल जैसी गेंद रोते-लुढ़कते नीचे आई।

सरपंच ने पूछा, “तुम इतने विशाल होकर भी रो रहे हो, क्यों?”

उत्तर मिला, “दोस्तो, मैं वह गेंद हूँ जिससे क्रिस गेल ने 175 रन मारे थे और वो भी ऐसे कि मैं चारों तरफ से सूज गई।”

पंचायत खत्म हुई और सरपंच जी ने फैसला सुनाया कि अब यह ‘अगेंदनीय’ बरताव रोकना पड़ेगा। तभी एक गेंद खिड़की तोड़कर अंदर घुस गई और जोर से बोली, “भाइयो-बहनो, मैं वह गेंद हूँ जिससे महेन्द्र सिंह धोनी ने अभी-अभी छक्का मारा है। मुझे बचाओ!”

गधा चला धोबीघाट

सोनाली कुमारी

चल गधे, अब उठ भी जा
कपड़े धोने जाना है
नींद में कोई काम नहीं होता
यह सबने माना है।

अपनी आँखें खोलकर
अब तो तू खड़ा हो जा
इतना सोने के बाद भी
तुझे लेना है और मजा?

आलस अपना छोड़ दे
जाना है धोबीघाट

धीरे-धीरे सुस्त तरह से
न होता कोई काम।

गधा उठा, बाहर निकला
धोबी ने कपड़े लाद दिए
धीरे-धीरे आगे बढ़ा
सारा बोझ पीठ पर लिए।

इतना चलने के बाद
वह धोबीघाट आ गया
सारा सामान नीचे उतारकर
वह वहीं पर सो गया।

The Cliff

Shivang Gunjyal



SUSMITA

A cool refreshing breeze blew away my sullen mood. After the sad demise of my mother and sister, my father had turned into a drunkard. He used all of his hard-earned money in gambling and liquor.

I am now walking towards our once pleasant garden, the place in which we had spent our happy moments. Earlier, it was well maintained by the gardener but now it lay all waste and had grown waist long weeds. My shoes and

sneakers are all dirty. But I don't think, it now mattered to anybody.

Both my sister and mother had jumped off the cliff. First it had been my sister after knowing that she had badly flunked her college and could not get any good job and being heavily drunk, she jumped off the cliff and committed suicide. No one survived after jumping from the cliff.

I am now on my way towards the cliff. Many stories of murder by pushing off the cliff and suicide haunted in our hill station. After my sister, followed my mother. She had known for a very long time that she was suffering from lung cancer but didn't tell anybody knowing that the money saved for my future would be wasted on her costly cancer treatment.

But my father got to know about her deadly disease and saved money for her treatment. That night he was going to reveal it to her and help her. But, it was too late. She had already left the house and gone to the cliff to commit suicide. From that day, my father blamed himself for not telling her earlier.

I was then left in some dark corner

of my house. I used to eat the food that was left in the house. And sometimes brought provisions from my pocket-money that I had saved, while my father spent the day and night in the bar to keep his sorrow away.

I have now reached the edge point of the cliff. I can easily escape from this treacherous world. I will be free and cease to live in this hard, cruel world.

As I was about to jump, I thought there would be nobody who would give a penny of a thought to me – leave alone

my drunkard father... No I should not do this, I cannot leave my father who was once loving and caring father. Isn't it my responsibility to take care of my father? I will help my father come out of his grief.

With this thought, I was again full of hope. Now, I do not wish to commit any mindless suicide. I will turn over a new chapter in my and my father's life. As I turned, determined to help my father and go home, I lost my foothold and fell backward into the cliff.

Love You Mom!

Yash Bhatia

Mom, you gave me birth
and a reason to live on earth
you gave me joy
and a reason to fly
you gave me satisfaction
showing all your perfection

You showered me with your blessings
all loving and caring
whenever I was worried
you made it your hobby
to make me energetic

You serve me the best dishes
all those delicious *puris* and fishes
you are the best mom forever
and for me you are supreme forever

Even though you were sad
you made me glad
now I have nothing to say
and for this I can never pay
Mom, I'm like a seed
your affection is all that I need!

कैसे करते हैं ये कलाकार 'चमत्कार'?

तारा कात्यायिनी सिंह

कभी-कभी मुझे अपने विद्यालय की अध्यापिकाओं के लिए बहुत दुख महसूस होता है। एक कक्षा के तीस बच्चों को सँभालना कोई बायें हाथ का खेल नहीं होता। बातें तो हर कोई करता है, किंतु अध्यापिका पर जो बीतती है, उसका अनुभव किसी को नहीं होता।

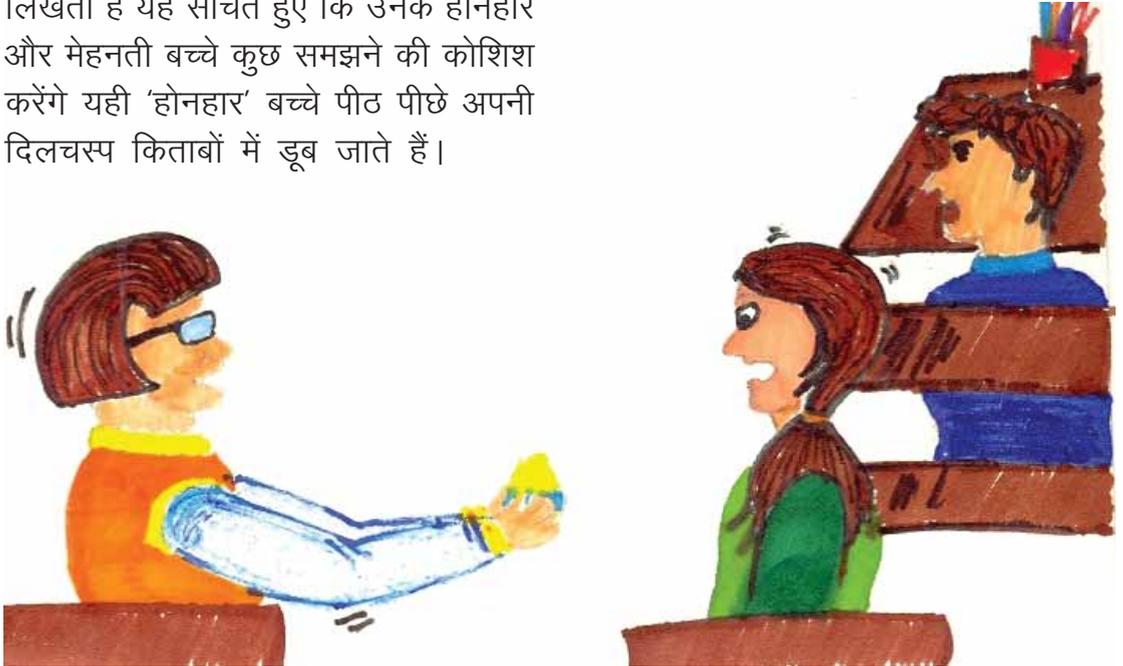
बातें ही नहीं, जैसे ही अध्यापिका अपनी पीठ छात्रों की तरफ करती है क्षणभर में ही पूरी कक्षा की हरकतें आरंभ हो जाती हैं।

जब अध्यापिका ब्लैक-बोर्ड पर कुछ लिखती है यह सोचते हुए कि उनके होनहार और मेहनती बच्चे कुछ समझने की कोशिश करेंगे यही 'होनहार' बच्चे पीठ पीछे अपनी दिलचस्प किताबों में डूब जाते हैं।

'माइकल एंजेलो' और 'डॉ. विंची' से प्रेरित होकर अपनी पाठ्य-पुस्तकों पर महान-से-महान चित्र बनाने लगते हैं।

गोद पर किसी और विषय की पुस्तक रखकर उसका काम करने लगते हैं। कक्षा के एक कोने की लड़की दूसरे कोने की लड़की से मुँह अरोड़-मरोड़कर बिना वाणी की बातें करती हुई दिखाई देती है। कोई उबासी लेता है, तो कोई बेकार की बात पर हँसता रहता है।

ये सब बातें तो बड़ी मामूली होती हैं एक साधारण-सी कक्षा में, पर सबसे महान



कलाकारी का कार्य तो वे विद्यार्थी कर पाते हैं जो इस कला में माहिर होते हैं।

यह कला है अध्यापिका की नजरों से बचकर अपने नेत्रों को क्षणभर का आराम देना।

जी हाँ! मैं उसी महान कला की बात कर रही हूँ—अध्यापिका के विषय पढ़ाते हुए उनकी नाक के बिलकुल नीचे होते हुए भी झपकियाँ ले लेना।

कैसे करते हैं ये कलाकार ऐसे अद्भुत चमत्कार!

सुबह उठकर जो भी नींद पूरी नहीं हो जाती वे लोग इसी नींद को कक्षा में पूरा कर लेते हैं। उनकी बंद आँखों और आराम करते हुए शरीर को हम सब (जिनमें इस विचित्र कला की कमी होती है) आँखें फाड़-फाड़कर देखते ही रहते हैं, जैसे कि वे कोई अनोखे प्राणी हों। सच में, अपने दिमाग को इस हद तक नियंत्रित करना ज्योतिषियों और स्टीफन हॉकिंग जैसे महापुरुषों से भी महान कार्य होता है।

ऐसे नीलाभी मनुष्यों के दिमाग का आप अगर आकलन करेंगे तो वाकई मालामाल हो जाएँगे, क्योंकि ऐसे मनुष्य विश्व में बहुत कम होते हैं जो बस कुछ ही विद्यालयों में मिलते हैं।



अनमोल कुमारी

अनोखी बात तो यह है कि अगर हम इस कला का अनुभव करना चाहें तो उसी पल अध्यापिका मुड़कर क्रोध भरी नजरों से हमारी तरफ देखकर शेर की दहाड़ के समान वाणी से हमें कक्षा से बाहर निकाल देती हैं। अब उनकी भी तो गलती नहीं है! वे सब तो अपना विषय पढ़ाना चाहती हैं। और हमारी भी तो गलती नहीं है!

हम तो बस इस कला को सीखना चाहते हैं। पर हाँ, अगर ऐसे कलाकार हमें यह कला सिखाने की जिम्मेदारी ले लें, तो सच में कुदरत का करिश्मा हो जाएगा।

घड़ी और चश्मा

अभिषेक राज

रात के साढ़े दस बजे रहे थे। रोहित अपने बिस्तर पर सो रहा था। रोहित को सोते देख तुरंत उसकी घड़ी और चश्मा जाग उठते हैं। रात को वे दोनों इसी तरह जागकर अपनी बातें एक-दूसरे को बताते थे, पर आज बातों-बातों में ही दोनों का झगड़ा शुरू हो जाता है।

चश्मा घमंड में आकर बोला, “मैं तो उसके नाक को सिंहासन बनाकर बैठता हूँ। उसके साथ पूरी दुनिया देखता और दिखाता हूँ।”

घड़ी ने भी अपनी बात कह डाली, “मेरी ही वजह से तो रोहित अपने काम समय पर कर पाता है!”

चश्मा अकड़कर बोला, “नहीं, समय तो मैं उसे दिखलाता हूँ।

घड़ी, “चल झूठे! तू उसे समय नहीं दिखाता। तेरे में तो ऐसा सिस्टम ही नहीं है।”

चश्मा अडिग होकर बोला, “मैं दिखाता हूँ।”

घड़ी बोली, “बता, कैसे?”

चश्मा बोला, “जब तक रोहित की आँखों पर मैं नहीं हूँगा तब तक वो तुझे देखेगा कैसे?” अब घड़ी को गुस्सा आ रहा था।

वह चश्मे से पिछड़ रही थी। इसलिए

वह बोल पड़ी, “मेरे अलार्म के बिना रोहित सुबह समय पर नहीं उठ पाएगा। उसे स्कूल जाने में देर हो जाएगी।”

चश्मा इस पर कुछ बोल नहीं पाया इसलिए उसने अपनी बात जारी रखी, “तुम तो मेरे सामने कूड़े हो, कूड़े!”

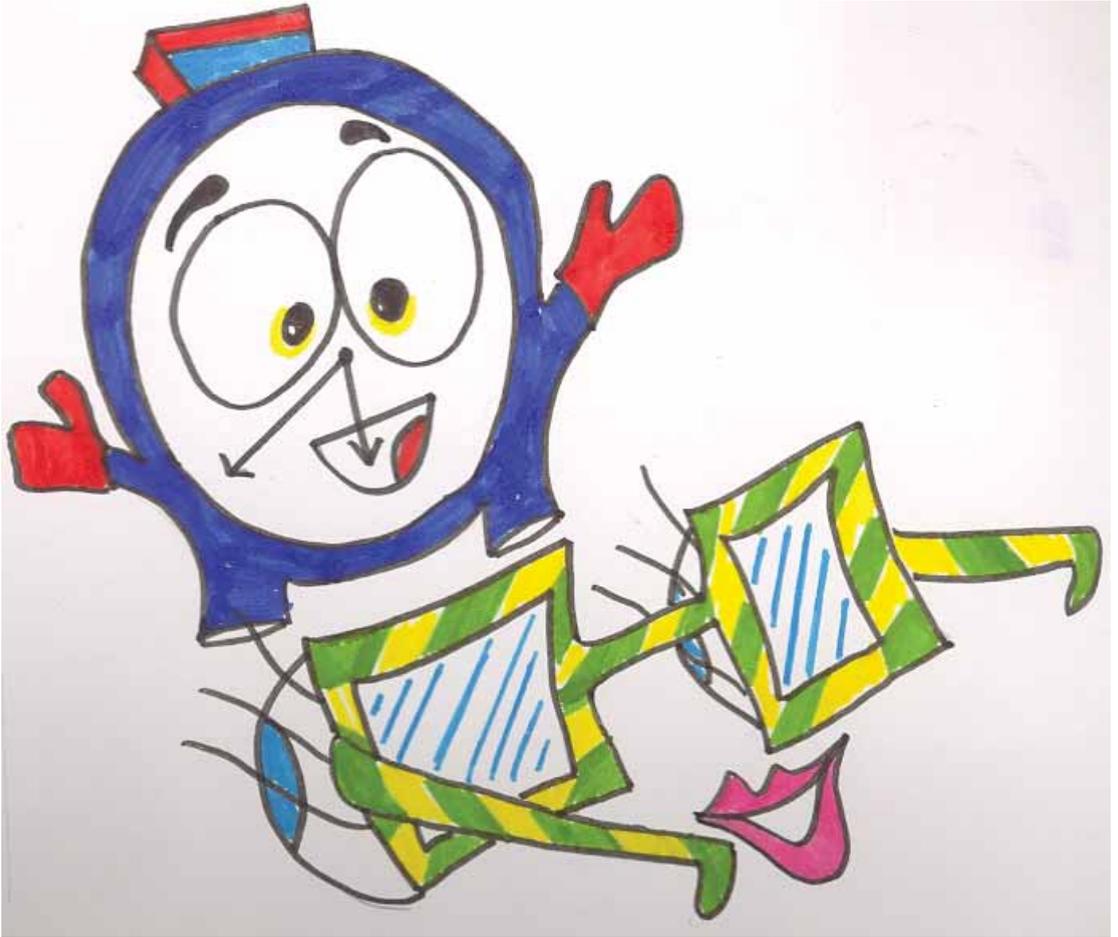
चश्मा भी उत्तेजित हो उठा, “मेरे बिना तो वो अंधे की तरह घूमता फिरेगा, पढ़ाई भी वो मेरे बिना नहीं कर सकता। सोचो, मैं कितना महत्वपूर्ण हूँ!”

घड़ी अपनी बात में पिछड़ना नहीं चाहता था। वह भी बोलने लगी, “तुम्हें तो वह डिब्बे में रखता है। तुम उसके डिब्बे में कैद होकर रह जाते हो। जबकि मैं यहाँ खुली हवा में साँस लेती हूँ।”

“अरे! तुम भी तो उसके हाथ में रहकर पिटती रहती हो! जब रोहित तुम्हें हाथ में पहनकर खेल खेलता है तो तुम्हें कितने ठोकरों की चोट खानी पड़ती है!”

घड़ी को भी अब गुस्सा आ रहा था। वह कहने लगी, “मैं बहुत आधुनिक हूँ। मैं सेकंड, महीना, दिनांक तक दिखाती हूँ। और मैं जल-अवरोधक भी हूँ। बताओ, इसका कोई तोड़ है क्या?”

इस समय घड़ी का पलड़ा भारी हो रहा था। घड़ी अपने बारे में और तारीफ किए जा रही थी। वह बोल रही थी कि वह तो इम्पोर्टेड है।



सुस्मिता बैनर्जी

चश्मे से अब रहा नहीं गया। वह बिस्तर के नीचे जाकर छिप गया। सोचा, 'देखता हूँ कि वो मेरे बिना कैसे काम चलाता है!'

सुबह जब अलार्म बजा तो रोहित अलार्म बंद करने की कोशिश करने लगा, पर उसने अभी चश्मा नहीं पहना था। घड़ी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अपने घड़ी को हाथ मार दिया और वह मेज से नीचे जाकर गिर गई, चश्मे के बगल में।

घड़ी अब बहुत दुख में थी। उसके शीशे टूट गए थे। वह रो रही थी। उसके दर्द से चश्मे का भी दिल पिघल गया।

वह उसके पास गया और बोला, "हम दोनों अपने काम में बराबरी का महत्व रखते हैं। हमें आपस में नहीं लड़ना चाहिए। हमारे बिना तो रोहित अपने दिनचर्या का कोई भी काम नहीं कर पाएगा।" इसके बाद दोनों में दोस्ती हो जाती है।

Follow Your Dream!

Alisha Lakra

A dream doesn't strike
our mind suddenly
but when it comes to us
it enchants us completely
gradually it becomes
life's purpose
life may be flowing
along another stream
but all you have to do is
follow your dream

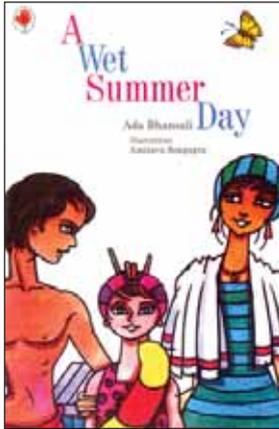
It gives us immense
peace of mind
sometimes it even
makes us scream
wanting to run away
from this society
that does bind
keeping us away from
that shining successful beam
but all you have to do is
follow your dream

In future someday you'll think
how successful you turned out to be
without paying heed to criticism
that made your hopeful heart sink
all that you did was
followed your dream!



SHUBHA KUMARI

Book Review



A Wet Summer Day

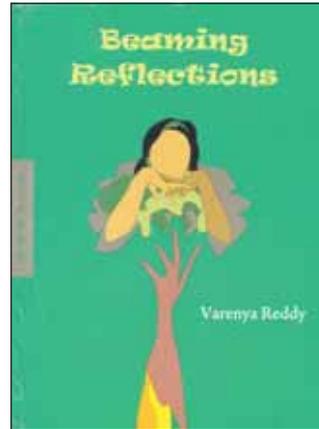
Ada Bhansali

National Book Trust, India

Rs. 105.00

A novella for young adults which dwells on a joint family situation where a lot of issues related to gender, sibling rivalry, social status, etc. crop up but an incident silences all differences and emotional bonding amongst family members prevails. The book has been illustrated by Amitava Sengupta

This debut novel by Ada for teenagers covers a quite a contemporary theme of sibling rivalry.



Beaming Reflections

Varenya Reddy

Samanvayi Publications

Rs. 180.00

This book is a collection of 32 poems written by a young budding poetess who has been writing since the age of 6. Poems like 'Mum I'm Sorry I Broke the Dish' and 'Unwanted Company' revolve around the world of a young child while the poems like 'Creative Thinking Saved the Day' and 'The Plea of Tree' reflect the imagination, deep expressions and concerns of the young poetess.

